मदन

डा0 वसीम सिद्दीक़ी
10/8th Road North
Ahmadi - 61008
Kuwait

''आइये..... बदरी प्रसाद जी!'' मैं ने बाहर लान में कुर्सी पर से उठते हुये उनका इस्तक़बाल किया। बदरी प्रसाद जी दूसरी कुर्सी पर बैठ गये। मैं ने वहीं से बैठे बैठे लान से अन्दर आवाज़ लगाई अरे भाई! बदरी प्रसाद जी आ गये! उस का का मतलब था कि काफी बनाकर बाहर भेज दी जाये।

बदरी प्रसाद जी हमारे पड़ोसी थे। बीवी को बहुत पहले ही मार चुके थे लेकिन उन को इतना चाहते थे कि फिर कभी दोबारा शादी के बारे में सोचा ही नहीं। एकलौता लड़का था। उस को पढ़ाई के लिये अमेरीका भेजा था। उसने पलट कर कभी खबर ही नहीं ली। पता चला कि वहीं बुरी सोहबतों में पड़ गया है।

एक अच्छे पड़ोसी होने के नाते मेरी यही कोशिश रहती थी कि बदरी प्रसाद जी की हर वक़्त दिल जूई करता रहूँ। उस का यही तरीक़ा था कि उन को तरह तरह की बहस में उलझाये रहता था। शाम को हम लोग काफी एक साथ पीते थे। कालेज में पढ़ाने के बाद मेरे पास काभी वक़्त रहता था कि उन से घन्टों बहस में उलझा रहूँ कभी बदरी प्रसाद जी के किसी आइडियल लीडर की बुराई कर देता था, कभी उन की पसंद की पार्टी में खामिया निकालता बस बदरी प्रसाद जी हत्थे से उखड़ जाते थे। लेकिन इतनी रियाअत करते कि मरने मारने पर आमादा नहीं होते।

बदरी प्रसाद जी काफी की चुस्कियाँ लेते जा रहे थे। मैं महसूस कर रहा था कि आज वह काफी बुझे बुझे से हैं। मैं ने सोचा किसी नई बहस को छेड़ने से पहले उन की खैरियत पूछ ली जाये। हो सकता है किसी वजह से कुछ परेशान हों।

बदरी प्रसाद जी बताने लगे कि आज वह अपने कपड़े की नाप देने गोल्डन टेलर के यहाँ गये थे, वहाँ एक लड़के को देखा जो उस दर्जी के यहाँ काम करता था किस चाबुकदस्ती से वोह कपड़ों की कटिंग कर रहा था कि मैं हैरतज़दह रह गया। कितनी खुद ऐतमादी से और कितनी तेज़ी से वह कपड़ों पर कैंची चला रहा था। लेकिन ये तो तारीफ़ के लायक़ बात है आप इस क़दर परेशान क्यों हैं? मैं ने बदरी प्रसाद जी से दरयाफ़्त किया। बदरी प्रसाद जी काफी देर तक खामोश रहे फिर बोले ''उस लड़के का नाम मदन है और उस की शकल मेरे मोहन से कुछ मिलती है।''

''अरे....'' मैं अरे के अलावा कुछ न कह सका। दो तीन रोज़ तक फिर उन्होंने दोबारा उस लड़के का ज़िक्र नहीं किया लेकिन आज जब आये तो बोले मैं आज उस दरजी के यहाँ अपने कुर्ते लेने गया था। मैं ने सोचा अपने कुर्ते तो वह किसी से मंगा सकते थे ज़ाहिर है उस लड़के से मिलने गये थे जिस में उन के लड़के मोहन की झलक है। वह फिर बोले मुझे उस लड़के से काफ़ी हमदर्दी है। गोल्डन टेलर वाला कितना कम पैसे देता है। मैं ने बदरी प्रसाद को मशवरा दिया कि वो इस लड़के को अपने किसी कारख़ाने में उस से ज़्यादा पैसे की नौकरी दे सकते हैं। बदरी प्रसाद जी बाले हाँ नौकरी तो दे सकता हूँ..... लेकिन उस से उसका हुनर खत्म हो जायेगा। ज़ाहिर है मेरी कोई

दरज़ी की दुकान तो है नहीं मेरे कारख़ाने में इस का कोई और काम करने का मतलब ये है कि वो अपना हुनर खोता जायेगा। बदरी प्रसाद जी ये कह कर खामोश हुये। फिर अपने घर को रवाना हो गये।

ये उन की खास आदत थी। बैठते थे तो अपनी छड़ी कुर्सी से टिका देते थे। और जैसे ही उन का हाथ दोबारा छेड़ी पर पड़ता तो मैं समझ लेता था कि अब ये एक दम उठेंगे और फिर बगैर एक मिनट भी रूके फौरन रवाना हो जायेंगे मुझे फाटक तक छोड़ने के लिये भी नहीं जाने देते थे। बस बस मैं चला जाऊँगा कहते हुये चल पड़ते थे। फिर खुद ही फाटक खोलते थे। दोबारा बन्द करते थे और तेज़ी से रवाना हो जाते।

दूसरे रोज़ जब बदरी प्रसाद जी आये तो बोले "मैं ने उसके लिये सोचा है कि उस की एक अलग दरज़ी की दुकान करा दी जाये। दुकान किराये पर मिल जायेगी, सिलाई की मशीन और दूसरे सामान उसको ख़रीद दूँगा ज़्यादा से ज़्यादा 20/25 हज़ार में सब हो जायेगा। उस की अपनी दुकान हो जायेगी अपने हुनर में तो माहिर ही दुकाल चल पड़ेगी। बेचारा पड़ा सड़ रहा है।" मैं ने सोचा हज़ारों लाखों की तादाद में बच्चे इधर उधर ज़ाया हो रहे हैं। मोहन की शबाहत की वजह से बदरी प्रसाद जी की हमदर्दी उस के साथ है, मैं ने बदरी प्रसाद जी को मशवरा दिया कि ठीक है उसे को टेलर की दुकान करवादें लेकिन उस को अभी न बतायें कि वो पूरी दुकान का मालिक हो गया है। बल्कि उस को उस दुकान पर नौकरी दें पहले से अच्छी तनख़्वाह पर। ज़ाहिर है कि काम करने लगेगा। फिर जब इस लायक़ हो जाये कि दुकान संभाल ले तो दुकान उसके हवाले कर दीजियेगा। अभी पूरी दुकान का उस को मालिक बनाइयेगा तो वह चकरा जायेगा। कुछ समझ नहीं पायेगा। बदरी प्रसाद को मेरा मशवरा पसंद आया। और वह ये कहते हुये उठ गये कि वह ऐसा ही करेंगे।

खिलाफे तवक़्क़ो बदरी प्रसाद कई रोज़ मेरी तरफ नहीं आये तो मैं ने उन की खैरियत दरयाफ़्त करने उन के घर पहुंच गया। मुझे देखते ही बोले "अरे.....मैं तुम्हारी तरफ आने वाला था। इधर काफी मशगूलियत में गुज़र गये।" मैं समझ गया कि क्या मशगूलियत रही होगी। उन से पूछा क्या उस दुकान का सब इन्तिज़ाम हो गया। खुश होकर बोले "हाँ साब हो गया..... दुकान भी किराये पर ले ही, मशीन भी ख़रीद ली है और मदन से भी बात कर ली। उस ने वहाँ से अपना हिसाब कर लिया। वैसे भी मैं ने मदन से यही बताया है कि उसे 500/- रूपया महीना पर कारीगर रखा है।

अब जब भी बदरी प्रसाद जी आते मदन का ज़िक्र करते रहते। बड़ा अच्छा है बहुत मेहनत करता है। पहले वह झुग्गी में रहता था अब वह घर पर ही रहता है मेरा बड़ा ख़्याल रखता है।

एक दिन बदरी प्रसाद जी बोले "मदन को दुकान संभाले हुये दो महीना से ज़्यादा हो रहा है। वह हर काम बहुत अच्छी तरह से करता है वह अब पूरी दुकान संभाल सकता है। मैं चाहता हूँ कि अब दुकान उस के हवाले कर दूँ।" मैं ने कहाँ "जी हाँ! मेरे ख़्याल में उसे दुकान किये हुये काफी दिन हो गये। अब दुकान उस के हवाले करने में कोई हर्ज नहीं।" बदरी प्रसाद जी बोले "हाँ..... एक दो रोज़ में उस के हवाले कर दूँगा कितना खुश होगा मदन। मैं चाहता हूँ उस के चेहरे पर किसी

परेशानी का निशान न हो वह हमेशा खुश रहे।'' एक दो मिनट की ख़ामोशी के बाद बोले '' परसों मोहन की पैदाइश का दिन है। कितनी धूम धाम से उस की सालगरा मनाई जाती थी। मैं चाहता हूँ कि उसी दिन ही दुकान उस के हवाले करदूँ। मैं ने भी यही समझ लिया है भगवान ने मोहन को दोबारा मेरे पास भेज दिया है।'' ये कह कर बदरी प्रसाद ख़ामोश हो गये। फिर ये कहते हुये खड़े हो गये कि परसों सुबह ही उन के यहाँ पहुँच जाऊँ, परसों इस सिलसिले में वो छोटा सा फंगशन करेंगे।

मैं बदरी प्रसाद के यहाँ जब सुबह ही सुबह पहुँचा तो अंदाज़ा हो गया कि ये कोई छोटा मोटा फंक्शन नहीं है बल्कि बदरी प्रसाद बड़े धूम धाम से जश्न मनाने का इरादा कर रहे हैं। बाहर लान में शामियाने क़नात लग रहे हैं कुर्सियाँ लगाई जा रही हैं। हर आदमी काम में लगा हुआ नज़र आ रहा है। मैं ने बदरी प्रसाद से पूछा ''मेरे लायक़ कोई काम'' बोले अरे बहुत काम करने वाले हैं। आओ..... अन्दर कमरे में बैठते हैं। मैं भी सुबह से सब के साथ लगा हूँ बहुत थक गया हूँ।

बदरी प्रसाद जी मुझे बैठा रहने का इशारा करके कमरे से निकल गये शायद कोई काम याद आ गया हो। फिर वह चमड़े का एक थैला लिये कमरे में वापस आ गये और कुर्सी पर बैठ कर रूपया निकाल कर गिनने लगे थोड़ी देर में मदन भी कमरे में आ गया।

''आप ने बुलाया था बाबू जी.....'' मदन ने बदरी प्रसाद जी से पूछा।

'' हाँ। मैं ने तुम को बुलाया था'' फिर उसने पूछा ''तुम किसी काज बनाने वाली आटोमेटिक मशीन के बारे में बात कर रहे थे। कितने तक आती है। ''मदन ने जवाब दिया यही पाँच हज़ार तक की'' कहाँ मिलती है? इसी शहर में मिल जायेगी।?

''हाँ बाबूजी मिल जायेगी'' मदन ने जवाब दिया। बदरी प्रसाद ने चमड़े का थैला उठाया और उस में रूपये निकाल कर कुछ बन्डल मदन को पकड़ाये'' ये लो पाँच हज़ार हैं। अभी जाकर मशीन लेते आओ। और देखो जल्दी आना। मेहमान आना शुरू हो गये हैं खाने के टाइम से पहले पहले आ जाओ।'' ठीक है बाबूजी कह कर मदन रूपया उठा कर कमरे से चल दिया।

बदरी प्रसाद जी बोले ''मैं चाहता हूँ आज उसे मुकम्मल दुकान दूँ जिस में किसी चीज़ की कमी न हो।'' मैं मदन की खुशक़िस्मती के बारे में तसव्वुर करने लगा। बदरी प्रसाद के बारे में सोचने लगा। इतना सब कुछ मदन के लिये क्यो कर रहे हैं। सिर्फ इस लिये कर रहे हैं कि मोहन की शबाहत है एक तरह से मदन अब उनके बेटे की तरह हो गया है। जब उसे बेटा बना ही लिया है तो फिर उसे अलग दुकान कराने की क्या ज़रूरत है। उन के कपड़ों की मीलें हैं। लाखों की आमदनी है, मैं ने सोचा बदरी प्रसाद बिज़नेसमैन हैं हर बात के पीछे कोई बात होगी। हो सकता है चाहते हों कि दुकान के ज़रिये मदन की अच्छी ट्रेनिंग हो जाये। फिर वह मदन को सीधे अपने बिज़नेस में ले आयें। दुकान तो किसी को नौकर रख कर भी चलाई जा सकती है। मैं इन्हीं सब बातों पर गौर कर रहा था कि कमरे में बदरी प्रसाद दाखिल हुये काफी परेशान नज़र आ रहे थे। बोले'' मदन को बाज़ार गये तो अब चार घन्टे से ज़्यादा हो रहे हैं। अब तक लौट कर नहीं आया। अरे..... अब तक नहीं आया।'' मुझे भी तशवीश हुई। इसके बाद पाँच घण्टे हुये, छः घण्टे हुये, रात हो गइ। लेकिन मदन लौट कर नहीं

आया। महमान सब वापस जा चुके थे। किसी ने खाना खा लिया था कोई बगैर खाये चला गया था। बदरी प्रसाद की तबियत ख़राब हो गई थी डा0 उन्हे देखने आया था, पता चला कि उन्हे दिल का दौरा पड़ा था।

मैं समझ गया। मदन अभागा पाँच हज़ार रूपये लेकर भाग गया। उसकी नियत में फुतूर आ गया। कितना बदकिस्मत लड़का हैं। काश मैं बदरी प्रसाद जी को ये मशवरा नहीं देता कि दुकान बाद में उन के हवाले करें शुरू ही से उस को मालूम होता कि वह उन सब चीज़ों का मालिक है तो क्यो भागता। पाँच हज़ार रूपये कितने दिन चलेंगे। वह फिर ठोकरें खायेगा। मैं समझ रहा था कि बदरी प्रसाद जी भी लेटे लेटे यही सब सोच रहे होंगे। मदन ने कितना जबरदस्त सदमा पहुँचाया है उन को मैं काफी रात तक उन के पास बैठा रहा। एक बार हलके से कहा "भई कहिये तो पुलिस में करादी जाये। वो मेरी तरफ अजीब तरह से देखते रहे बाले " तुम नहीं समझोगे" मैं ने सोचा वाक़ई मैं इस वक़्त बेवकूफी की बात कर गया। पुलिस में तो वह रिपोर्ट कराता है जिसे पाँच हज़ार का ग़म होता। बदरी प्रसाद जी पर तो उस वक़्त ग़मों को पहाड़ टूट पड़ा था। उन के कई रिश्तेदार रूक गये थे। मैं अपने घर चला आया रात भर नींद नहीं आई। कभी बदरी प्रसाद जी के बारे में सोचता कभी मदन के बारे में उस की बदकिस्मती पर अफसोस हो रहा था। दूसरे रोज़ सुबह बदरी प्रसाद जी के यहाँ पहुँचा तो उन की तबीअत काफी ख़राब महसूस की। मैं ने सोचा पता नहीं इस सदमें को वह झेल पायेंगे कि नहीं। कालेज से छुट्टी लेली दिन भर उन्हीं के पास रहा। हर आदमी मदन को लानत मलामन कर रहा था मैं भी इस में बराबर का शरीक था वह मिल जाता तो दो चार डन्डे भी रसीद करता लेकिन लानत मलामन करने के अलावा और कोई चारा नहीं था। बदरी प्रसाद जी को जैसे सकता हो गया था। कुछ बोल नहीं रहे थे हर बात के जवाब में सिर्फ हाँ हूँ उस के अलावा और कुछ नहीं। मैं ने सोचा बदरी प्रसाद जी को उस लड़के का गाँव तो मालूम ही है जहाँ से वह भाग कर शहर आया था। लेकिन वह पाँच हज़ार लेकर अपने गाँव तो गया नहीं होगा। कहीं और गया होगा अगर वो अपने गाँव में मिल भी जाता है तो क्या वो दोबारा उन इनायतों का हक़दार हो सकता है। मैं रात में अपने घर वापस आ गया। डाक्टरों ने कहाँ अभी बड़ी एहतियात की ज़रूरत है। उनकी हालत खतरे से बाहर नहीं है। मैं ने सोचा वाक़ई उन को ये सदमा भी बिलकुल ऐसा हुआ है जैसे कि उन का कोई खोया हुआ बच्चा वापस मिल जाये और फिर खो जाये। सुबह मैं उठा जल्दी जल्दी नाश्ता किया। आज कालेज जाना ज़रूरी था। सोचा बदरी प्रसाद जी को देखता हुआ इधर ही से कालेज चला जाऊँगा।

घर से निकलते निकलते अखबार वाले ने अखबार पकड़ा दिया। मैं ने देर से अख़बार लाने पर उसे सख़्त सुस्त कहा। फिर बदरी प्रसाद जी की तरफ मुड़ गया अख़बार देखता जा रहा था। मैं एक तस्वीर देखकर बुरी तरह चौंका। ये मदन की लाश की तस्वीर थी। ना मालूम लड़के की लाश रेलवे क्रासिंग के पास पड़ी हुई मिली। जिस्म पर चाकू के ज़ख़्म थे। पुलिस का ख़्याल है उसे क़त्ल करके वहाँ फैंक दिया गया पुलिस असबाब जानने की कोशिश कर रही है। इस खबर को पढ़कर

मेरा दिमाग बिलकुल चकरा गया है। मैं अपने कमरे में वापस आकर बैठ गया। बेचारा मदन, मासूम नौ उम्र लड़का, अगर पाँच हज़ार रूपये लेकर घर से इस जराएम पेशा शहर से निकलेगा तो कोई भी बदमाश पीछे लग सकता है। जब कि बाज़ार बदरी प्रसाद के घर से काफी दूर है। रेलवे क्रासिंग तो उसी रास्ते में ही पड़ती है और उस के इलाक़े में कितनी ही वारदातें हो चुकी हैं। मेरा दिल रह रह कर मदन के लिये रो रहा था। मैं सोच रहा था कि ये अख़बार बदरी प्रसाद के यहाँ भी जाता है। ये ख़बर उन्हे मालूम हुई होगी। उन्होंने नहीं पढ़ी होगी या तो किसी ने भी उन्हे बता दिया होगा। पता नहीं बदरी प्रसाद जी का क्या हाल होगा। हो सकता है उन्हें ये सुकून मिले कि मदन ने उन्हे धोका नहीं दिया। लेकिन नहीं वह तो उनका बेटा मोहन था, उनका बेट..... उनके बेटे का खून..... दोबारा ज़िन्दा होकर फिर मर गया। पता नहीं बदरी प्रसाद जी का क्या हशर हो। मैं कमरे से निकल कर बहुत भारी क़दमों से उनके यहाँ जा रहा था।

★★★